मुद्रणः एस.एस. ब्रजबासी एण्ड सन्स, बम्बई-३

# श्री अग्रसेन चालीसा

## अग्रवाल झण्डा गान

झण्डा लहर लहर लहराए ।
अग्रवंश की कीर्ति सुनाए ॥
केसरिया रंग बहुत सुहाए,
त्याग भाव का पाठ पढ़ाए ।
हम सब जीवन में अपनाएं ॥
झण्डा.....
अठारह किरणों का गोला,
गोत्रों की बोली है बोला ।
राज्य व्यवस्था को बतलाकर,
अग्रसेन की याद दिलाए ॥
झण्डा.....
एक रुपया संग ईंट जड़ी है,
इसमें समता बहुत बड़ी है ।

अग्रोहा की याद दिलाए।
झण्डा.....
ऊपर नीचे कूल बने हैं,
मिले बीच अनुकूल घने हैं।
ऊंच-नीच का भेद मिटा कर,
समता हम जीवन में लाएं॥
झण्डा.....

रचयिता - डा. विष्णु चन्द्र गुप्त

## श्री अग्रसेन चालीसा

### सोरठा

सुमिरहूं श्री गणराज,
प्रथम पूज्य गिरजा सुवन।
सुफल करहु सब काज,
बार-बार वंदहुं चरन।



### चौपाई

बंदहुं महा महिम अवनीशा,
अवतारेउ जन हित जगदीशा।
भानु वंश जिन्ह कीन्ह उजागर,
अनुपम अति शोभा सुखसागर।
मुकुट मनोहर माथे सोहे,
भाल विशाल तिलक मन मोहे।
अलकें घुंघरालीं अति प्यारी,
मोतिन लरन गुंथी रतनारी।
कमल नयन वर भृकुटि विशाला,
कानन कनक जड़ित शुचिबाला।
नासा अमित मनोहर नीकी,
डाढ़ी शुभ्र मूंछ प्रभु जी की।

निरख मदन मन रहो लुभाई,
शशि आनन की सुन्दरताई।
अंग अंगरखी ललित सुहाई,
चूड़ीदार विचित्र सराई।
हीरन हार कंठ मणि माला,
विचविच मोतिन मण्डित आला।
फेंट कृपान कसी कटि नीकी,
अरिदल गंजन तेज अनीकी।
जय जय अग्रसेन महाराजा,
कीन्हों सकल विश्व को काजा।
जय नृप ऋषि जय गौ हितकारी,
अग्रदेव जय जय असुरारी।
त्रेता युग अवतार अनेका,
भये विचित्र एक ते एका।



महाराज महिधर नृप गेहा,
लीनेहु प्रभु अवतारसनेहा।
श्रुति कह बारंबार पुकारी,
लीला अपरंपार तिहारी।
वैश्य वंश के अग्र अधिष्ठा,
श्राप निवार निभाई निष्ठा।
इष्ट देव प्रभु पूज्य हमारे,
जीव मात्र के हैं रखवारे।
तपो भूमि सुन्दर शुचि जानी,
नगर बसाय कीन्ह रजधानी।
वापी कूप तड़ाग खुदाये,
मन्दिर विविध वरन बनवाये।
परम रम्य अग्रोहा पावन,
सकल कलुष त्रय ताप नसावन।

दिव्य राज दरबार अनूपा,
ब्राजहिं जड़ित सिंहासन भूपा।
छत्र चंवर अनुपम छवि छाजे
निरख देवपति को मन लाजै।
पुत्र बली युवराज अठारा,
चतुर सूर सरदार अपारा।
सुखी रहिहिं सब पुर के लोगा,
सुलभ जिन्हें सुरपुर सम भोगा।
सकल तीर्थ नाना विधि कीन्हें,
बहु प्रकार विप्रन्ह धन दीन्हें।
वेद पुरान सुने मन लाई,
पूरे सत्रह यज्ञ कराई।
पशु हिंसा लख यज्ञ अधूरी,
छोड़ दई कीन्ही नहिं पूरी।



अग्रवाल कुल तिहते पाये,
साढ़े सत्रह गोत्र कहाये।
गरगसु गोइल सिंहल मीतल,
बांसल कांसल ऐरन जीतल।
कुच्छल मंगल तायल तिंगल,
धारण भंदल नागिल बिंदल।
मघुकुल गोयन नाम धराये,
इक इक गणहिं सौंप चलाये।
तिह साखें त्रयलोक समानी,
सुखी सकल समृद्ध दिखानी।
कीन्ह विविध विधि देव भलाई,
वसुधा निरख निरख बलि जाई।
प्रभु अपने जन की रूचि राखें,
पूरन करिहि सदा अभिलाखें।

सुमिरत अग्रदेव जगमाहीं,
कठिन सो काज सुलभ हो जाहीं।
सहित सनेह ध्यान धर जोई,
मन वांछित फल पावै सोई।
अग्रदेव चालीसा पढ़तन,
सुफल होय जन को मानस तन।
रोग हरै तन तेज प्रकासै,
नित नव सुख सम्पति गृह वासै।
धन्य होय प्रभु के गुण गावैं,
परमानंद मगन मन रहवें।
बालक अबुध दीन जन जानी,
कृपा करहु कुल गुरू गुण ज्ञानी।

**दोहा**

प्रेम सहित नित पाठकर, ध्यावहिं जो चित लाय।



अग्रसेन महाराज जी, ताकी करहिं सहाय॥
सेवक बाबूलाल सौं, कह लायो गुरू देव।
हृदय गोय राखहु सुजन, जीवन को फल लेव॥

**- बाबूलाल, छतरपुर (म.प्र.)**

## अग्रसेन आरती

जय अग्रसेन हरे, स्वामी जय श्री अग्र रहे।
कोटि-कोटि नत-मस्तक, सादर नमन करे।
ओम जय श्री अग्र हरे।
आश्विन शुक्ला एकम् नृप बल्लभ जाये।
स्वामी बल्लभ घर आये।
अग्रवंश संस्थापक, नागवंश ब्याहे.....
ओम जय श्री अग्र हरे।

केसरिया ध्वज फहरे, छत्र चंबर धारी,
स्वामी छत्र, चंवर धारी ।
झांझ, नफीरी, नौबत, बाजत तब द्वारे ।.....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
अग्रोहा रजधानी, इन्द्र शरण आये ।
प्रभु इन्द्र शरण आये ।
गोत्र अठारह अब तक, तेरे गुण गाये.....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
सत्य, अहिंसा पालक, न्याय नीति समता,
प्रभु न्याय नीति समता ।
ईंट रुपया की रीति, प्रकट करे ममता.....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
ब्रह्मा, विष्णु, शंकर, वर सिंहनी दीन्हा,
स्वामी वर सिंहनी दीन्हा ।



कुलदेवी महामाया, वैश्य कर्म कीन्हा ।.....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
अग्रसेन जी की आरती, जो कोई नर गाये ।
स्वामी जो सुन्दर गाये ।
कहत 'त्रिलोक' विनय से, इच्छित फल पाये.....
ओम जय श्री अग्र हरे ।
**- त्रिलोक गोयल, अजमेर (राज.)**

## लक्ष्मी जी की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता ।
अग्रवंश कुल देवी, अग्रसेन ध्याता ॥ ओम.....
अग्रोहा के धाम विराजी, यात्री जन आता ।
आकर दर्शन पावे, ऋद्धि सिद्ध पाता ॥ ओम.....
ब्रह्माणी, रूद्राणी, कमला, तू ही जग-माता ।

सूर्य-चन्द्र नित ध्यावें, नारद ऋषि गाता ॥ ओम...
तू पाताल वसन्ती, तू ही शुभ दाता।
दुर्गा रूप निरंजन, सुख-सम्पत्ति दाता ॥ ओम.....
कर्म-प्रभाव प्रकासिनी, जगनिधि की ज्ञाता।
जहां वास है तेरा, वहां पुण्य आता ॥ ओम.....
तुम बिन यज्ञ न होवे, मुक्ति न कोई पाता।
मोक्ष और धन वैभव, तुम बिन को दाता ॥ ओम...
आरती लक्ष्मी जी की, जो कोई नर गाता।
जीवन सुफल बनाकर, पार उतर जाता ॥ ओम....
जय लक्ष्मी मां जय अग्रोहा, कण-कण जय गाता।
शक्ति सरोवर न्हाकर तव दर्शन पाता ॥
ओम जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।
अग्रवंश कुल देवी, अग्रसेन ध्याता ॥

**- गुणसागर शर्मा सत्यार्थी**



## महालक्ष्मी की अर्चना विधि

**- आचार्य दुर्गाचरण शुक्ल**

शाक्त परम्परा में और वैदिक परम्परा में भगवती महालक्ष्मी और श्रीयंत्र की पूजा की संक्षिप्त और सर्वमान्य विधि "श्रीसूक्त" के द्वारा विहित है।

जो साधक स्थिर लक्ष्मी चाहते है उनके लिए इस श्रीसूक्त से बढ़कर कोई पाठ नहीं है। श्रीसूक्त के सोलह मंत्र ऋग्वेद के खिल भाग में स्थित षोडष उज्ज्वल रत्न हैं। प्रथम मंत्र की ऋषि "इन्दिरा" हैं और शेष पन्द्रह ऋचाओं के ऋषि आनंद, कर्दम और चिक्लीत ऋषि है। ये तीनों ही मां लक्ष्मी के पुत्र हैं।

नीचे श्रीसूक्तम् और अर्चना का संक्षिप्त क्रम दिया जा रहा है।

## ॥ अथ श्री सूक्तम ॥

**1. (आवाहन मंत्र)**

हिरण्यवर्णा हरिणीं सुवर्ण रजस्त्रजाम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

**2. (आसन मंत्र)**

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् । यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरूषानहम् ॥

**3. (पाद्य मंत्र)**

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनाद प्रमोदिनीम् । श्रियं देवीमुप ह्वये श्रीर्मा देवी जुषताम् ॥

**4. (अर्घ्य मंत्र)**

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारमांर्द्रा ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ॥ पद्मेस्थितां पद्मवर्णा तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥

**5. (आचमन मंत्र)**

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ॥ तां पद्मिनीमीं शरणं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥



**6. (स्नान मंत्र)**

आदित्यवर्ण तपसोधि जातो वनस्पतिस्तव वृक्षोथ बिल्वः ॥ तस्य फलानि तपसा नुदन्तु या अन्तरा याश्च वाह्या अलक्ष्मी : ॥

**7. (वस्त्र स्नान)**

उपैतु मां देवसरवः कीर्तिश्च मणिना सह । प्रादुर्भूतोस्मि राष्ट्रेस्मिन् कीर्ति मृद्धिं ददातु मे ॥

**8. (यज्ञोपवीत मंत्र)**

क्षुत पिपासामलां ज्येष्ठां अलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् । अभूतिं असमृद्धिं च सर्वां निर्णुदमे गृहात् ।

**9. (चन्दन मंत्र)**

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरी सर्वभूतानां तामिहोप ह्वये श्रियम् ।

**10. (पुष्प मंत्र)**

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ।

**11. (धूप मंत्र)**

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम ।, श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ।

**12. (दीप मंत्र)**

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे। नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले।

**13. (नैवद्य मंत्र)**

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिंगला पद्ममालिनीम् । चन्द्रां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।

**14. (फल-ताम्बूलादि मंत्र)**

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं सुवर्णां हेम मालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयी लक्ष्मीं जात वेदो म आवह।

**15. (नीराजन मंत्र)**

तां म आ वह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योश्वान् विन्देयं पुरुषानहम्।

**16. (पुष्पांजलि मंत्र)**

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्य मन्वहम्। सूक्तं पंच दशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्।

नमस्कार (प्रदक्षिणा) यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञ क्रियादिषु।
न्यूनंसंपूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमऽच्युतम्।
ऊं विष्णवे नमः। ओं विष्णवे नमः। ऊं विष्णवे नमः।

(यह कहे)।

मुद्रणः एस.एस. ब्रजबासी एण्ड सन्स, बम्बई-३

# श्री अग्रसेन चालीसा